National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 77-80
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सोनिका कुमारी
शोधछात्रा, हिन्दी विभाग,
मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय,
सिहोर (म. प्र.)

शोध निर्देशक
डॉ. दीपिका जैन
हिन्दी विभाग,
मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय,
सिहोर (म. प्र.)

Correspondence:
सोनिका कुमारी
शोधछात्रा, हिन्दी विभाग,
मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय,
सिहोर (म. प्र.)

उषा प्रियवंदा के कथा साहित्य में जीवन मूल्य का अध्ययन

सोनिका कुमारी, डॉ. दीपिका जैन

सारांश

उषा प्रियवंदा का कथा साहित्य भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जहाँ उन्होनें जीवन के यथार्थ और सामाजिक मुद्दों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके कथा साहित्य में जीवन मूल्य एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, जो न केवल मानवीय सवदनाओं को उजागर करते हैं बल्कि समाज की जटिलताओं को भी विश्लिषत करते हैं। उनके साहित्य में व्यक्त जीवन मूल्य जीवन के सघंर्ष, पारिवारिक सबंधें सामाजिक परंपराओ, और नैतिकता के बीच एक संतुलन स्थापित करते हुए दिखाई देते हैं। उषा प्रियवंदा का साहित्य मुख्यतः शहरी जीवन, मध्यम वर्गीय परिवारों और महिलाओं के मुद्दों पर केंद्रित है। उन्हानें अपने लेखन के माध्यम से जीवन के उन पक्षों को प्रस्तुत किया है जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। उनके कथा साहित्य में जीवन मूल्य, जैसे ईमानदारी, आत्म-सम्मान, त्याग, और स्वतंत्रता की आकांक्षा, प्रखरता से उभरते हैं। यह उनके लेखन की खासियत है कि वे समाज की बाहरी चमक-धमक के परे जाकर मानवीय भावनाओं और अंतर्द्वंद्वों को उजागर करती हैं। उदाहरण के तौर पर, उनकी कहानी ष्रुकोगी नहीं राधिका?ष् में मुख्य पात्र राधिका के माध्यम से उन्होनें एक आधुनिक, शिक्षित महिला की स्वतंत्रता की आकांक्षा और पारिवारिक दायित्वों के बीच के द्वंद्व को दर्शाया है। इस कहानी में राधिका का चरित्र उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने जीवन को अपने तरीके से जीने की चाहत रखती हैं, लेकिन पारंपरिक सामाजिक ढांचे में फंसी होती हैं।

मुख्यशब्द- उषा प्रियवंदा, कथा साहित्य, जीवन मूल्य, भारतीय साहित्य, शहरी जीवन, महिलाओं का प्रतिनिधित्व

प्रस्तावना

उषा प्रियवंदा ने विशेष रूप से महिलाओं की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता के मुद्दों को अपन कथा साहित्य में उठाया है। उन्हानें उन सामाजिक ढांचों और परंपराओं पर सवाल उठाए हैं जो महिलाओं को एक निश्चित भूमिका में बांधते हैं। उनके लेखन में स्त्री-स्वातंत्र्य का स्वर प्रमुखता से गूंजता है, जहाँ उन्हानें यह दिखाया है कि महिलाएं केवल परिवार और समाज की देखरेख करने के लिए नहीं बनीं, बल्कि वे अपनी स्वतंत्र पहचान और अस्तित्व के लिए भी संघर्ष कर सकती हैं। यह संघर्ष केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी होता है, जहाँ वे अपने आत्मसम्मान और अस्तित्व के लिए लड़ती हैं।

उनकी कहानियों में नैतिकता का प्रश्न भी बार-बार उभरता है। उनके पात्र अक्सर नैतिक द्वंद्व और आत्म-सवं दे ना के क्षणां से गुजरते हैं। उदाहरण के लिए, पीली छतरी वाली उनकी कहानियों में नैतिकता का

प्रश्न भी बार-बार उभरता है। उनके पात्र अक्सर नैतिक द्वंद्व और आत्म-सवंदेना के क्षणो से गुजरते हैं। उदाहरण के लिए, "पीली छतरी वाली लड़की" जैसी कहानियों में नैतिकता के सवाल को संवेदनशीलता के साथ उठाया गया है। यह कहानी एक युवा महिला के आत्मसम्मान और प्रमे के बीच के संघर्ष को दर्शाती है, जहाँ वह अपनी पहचान और व्यक्तिगत मूल्यों के साथ समझौता नहीं करना चाहती। इस कहानी के माध्यम से उषा प्रियवंदा ने यह संदेश दिया है कि जीवन में नैतिकता और आत्मसम्मान का मूल्य बहुत ऊँचा होता है, और किसी भी रिश्ते या सामाजिक अपेक्षा के लिए इसे खोना सही नहीं है। उषा प्रियवंदा का लेखन भारतीय समाज की उन जटिलताओं को भी सामने लाता है जा पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन के साथ उत्पन्न होती हैं। उनका साहित्य इसबदलाव को केवल नकारात्मक रूप में नहीं देखता, बल्कि वह यह भी दर्शाता है कि इन परिवर्तनों के साथ-साथ नए जीवन मूल्यों का उदय भी होता है जो समाज को अधिक प्रगतिशील और सवं सवेदनशील बनाते हैं। उनके पात्र जीवन के यथार्थ को स्वीकार करते हैं और नई परिस्थितियों के साथ अपने जीवन को ढालने की कोशिश करते हैं। यह जीवन क प्रति उनका व्यावहारिक दृष्टिकोण है, जो यह सिखाता है कि व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार बदलना पड़ता है, लेिकन मूल्यों और सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करना चाहिए।उनके कथा साहित्य में एक और प्रमुख जीवन मूल्य जो उभर कर आता है, वह है प्रमे और करुणा। उनके पात्र अक्सर प्रमे के जटिल रूपों से गुजरते हैं, जहाँ वे न केवल रोमांटिक प्रमे बल्कि पारिवारिक प्रेम, मित्रता, और मानवीय करुणा के विभिन्न आयामों का अनुभव करते हैं। इन कहानियों में यह दिखाया गया है कि प्रमे और करुणा न केवल व्यक्ति के जीवन को समृद्ध करते हैं, बल्कि यह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का भी माध्यम बन सकते हैं। उनके लेखन में करुणा का यह स्वर एक प्रकार से जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है, जहाँ हर परिस्थिति में मानवीय मूल्यों का पालन किया जा सकता है। उषा प्रियवंदा के साहित्य में आधुनिकता और परंपरा के बीच का टकराव भी देखा जा सकता है। वे यह दिखाती हैं कि आधुनिक जीवनशैली अपनाने के बावजूद मानवीय संवेदनाएं और जीवन मूल्य अपरिवर्तित रहते हैं। उनके लेखन में परंपरागत समाज की सीमाओं और आधुनिकता की चुनौतियों के बीच संतुलन बनाने की काेिशश स्पष्ट रूप से झलकती है। यह संतुलन केवल बाहरी जीवन में ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के आतं रिक जीवन में भी आवश्यक होता है, जहाँ वह अपनी जड़ों और वर्तमान के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

उषा प्रियवंदा का कथा साहित्य न केवल भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों का दर्पण है, बल्कि यह पाठकों को जीवन के गहरे अर्थ आरै मानवीय मूल्यों के महत्व को भी समझाता है। उनके पात्र और कथानक जीवन की वास्तविकताओं से गहराई से जुड़े हुए हैं, जो न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि पाठकों को आत्मनिरीक्षण के लिए भी प्रेरित करते हैं। जीवन में नैतिकता, आत्मसम्मान, प्रमे , स्वतंत्रता, और करुणा जैसे मूल्यों की महत्ता को उनके लेखन के माध्यम से बार-बार रेखांकित किया गया है, जो उनके साहित्य को एक विशेष गहराई और सार्थकता प्रदान करता है।

जीवन मूल्य अर्थ और स्वरूप

जीवन मूल्य वह नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांत हैं जो हमारे आचरण, सोच और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को आकार देते हैं। वे समाज के सांस्कृतिक, नैतिक और धार्मिक धारणाओं से प्रेरित होते हैं और जीवन को एक दिशा प्रदान करते हैं। जीवन मूल्यों का अर्थ और स्वरूप व्यक्ति की सोच, दृष्टिकोण, और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं। ये मूल्य केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं होते, बल्कि समाज के विकास और सामूहिक अस्तित्व में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जीवन मूल्यों का स्वरूप स्थायी हो सकता है, लेकिन उनकी अभिव्यक्ति समय और परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है। जीवन मूल्य का अर्थ व्यापक है और यह जीवन के विभिन्न आयामों में व्यक्त होता है। मूल्य किसी विशेष संस्कृति, धर्म, या समाज की परंपराओं और धारणाओं का परिणाम हो सकते हैं। यह सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता को दर्शाते हैं। जीवन मूल्यों का सही अर्थ तभी समझा जा सकता है, जब हम उनके सामाजिक, व्यक्तिगत, और नैतिक पक्षों का गहराई से विश्लेषण करे। जीवन मूल्यों को अक्सर नैतिकता, ईमानदारी, करुणा, स्वतंत्रता, न्याय, प्रेम, और समानता के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। ये मूल्य न केवल हमारे व्यक्तिगत आचरण को नियंत्रित करते हैं, बल्कि समाज के सामान्य ढांचे को भी संचालित करते हैं।

मूल्यो में परिवर्तन कारक परिस्थितियाँ

मूल्यों में परिवर्तन समाज और व्यक्ति के जीवन में होने वाले बदलाव का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मूल्य वे नैतिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक सिद्धांत हैं जो किसी समाज या व्यक्ति के जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। समय के साथ, ये मूल्य बदलते हैं या अद्यतन होते हैं, क्योंकि वे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिर्क, और तकनीकी परिवर्तनों से प्रभावित होते हैं। मूल्यों में परिवर्तन का

अध्ययन करना समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, और मानविकी के अन्य क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दिखाता है कि समाज कैसे बदलता है और इसके परिणामस्वरूप व्यक्तियों की सोच, व्यवहार, और दृष्टिकोण भी कैसे प्रभावित होते हैं।

मूल्यों में परिवर्तन के कारक और परिस्थितियाँ कई रूपों में प्रकट हो सकती हैं। सबस पहले, समाज में होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन मूल्यों को गहराई से प्रभावित करते हैं। सांस्कृतिक परिवर्तन का अर्थ है परंपराओं मान्यताओं और आचार-व्यवहार में बदलाव, जो समय के साथ धीरे-धीरे विकसित होता है। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज में पूर्व में सयं ुक्त परिवार व्यवस्था को अत्यधिक महत्व दिया जाता था, लेकिन आजकल एकल परिवारों का चलन बढ़ता जा रहा है। यह परिवर्तन आर्थिक स्वतंत्रता, शहरीकरण, और व्यक्तिवाद की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण हुआ है।

आधुनिकता और वैश्वीकरण भी मूल्यों के परिवर्तन के प्रमुख कारक हैं। वैश्वीकरण ने दुनिया को एक श्ग्लोबल विलेजश् में बदल दिया है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के लोग आपस में सपं र्क में आते हैं और उनकी विचारधाराओं का आदान-प्रदान होता है। इसका प्रभाव यह हुआ है कि पारंपरिक मूल्यों के स्थान पर नए और आधुनिक विचारों ने जगह बनाई है। उदाहरण के तौर पर, पश्चिमी समाजों में महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जो धीरे-धीरे अन्य देशों में भी अपनाया जा रहा है। इस प्रकार के सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने विभिन्न समाजों में मूल्यों के परिवर्तन को बढ़ावा दिया है।

प्रौद्योगिकी और विज्ञान में प्रगति भी मूल्यों के बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रौद्योगिकी ने न केवल जीवन के तरीकों को बदल दिया है, बल्कि नैतिकता और सामाजिक व्यवहार के मानकों को भी प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने व्यक्तिगत गोपनीयता और सुरक्षा के मूल्य को चुनौती दी है। साथ ही, चिकित्सा विज्ञान में विकास ने जीवन और मृत्यु के बारे में हमारे दृष्टिकोण को बदल दिया है, जैसे कि अंग प्रत्यारोपण, जीन थैरेपी, और कृत्रिम गर्भाधान जैसे क्षत्रों मे। यह स्पष्ट है कि जब तकनीकी प्रगति मानव जीवन को प्रभावित करती है, तो नैतिकता और मूल्यों के पारपं रिक मानदंड भी बदलते हैं।

पारिवारिक मूल्य

पारिवारिक मूल्य किसी भी समाज की नींव का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, जो परिवार के सदस्यों के बीच संबंधो कर्तव्यों और व्यवहार के आदर्शों को निर्धारित करते हैं। ये मूल्य समय और परिस्थिति के साथ बदलते रहते हैं, लेकिन उनका महत्व हमेशा समाज के हर व्यक्ति के जीवन में बना रहता है। पारिवारिक मूल्यों में वे सभी नैतिक और सांस्कृतिक सिद्धांत शामिल होते हैं, जो परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी, समर्पण और आदर सिखाते हैं। इन मूल्यों का आधार समाज की सांस्कृतिक धारणाओं और धार्मिक मान्यताओं में निहित होता है, जो परिवार के भीतर प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारिवारिक मूल्य आमतौर पर चार प्रमुख पहलुओं में विभाजित किए जा सकते हैंरू नैतिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक, और सामाजिक। नैतिक मूल्यों में ईमानदारी, निष्ठा, अनुशासन, और नैतिकता शामिल हैं। ये मूल्य परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे के साथ सत्य और निष्पक्षता के साथ व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं। सांस्कृतिक मूल्य, किसी समाज की परंपराओं और मान्यताओं से जुड़े होते हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार के भीतर हस्तांतरित होते हैं। इनका उद्देश्य परिवार के भीतर सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखना और आने वाली पीढ़ियों तक उसका प्रसार करना है। भावनात्मक मूल्य आपसी प्रेम, सहानुभूति, और समझदारी पर आधारित होते हैं, जो परिवार के सदस्यों के बीच मजबूत भावनात्मक बंधन का निर्माण करते हैं। सामाजिक मूल्य सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सेवा की भावना को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे परिवार के सदस्य समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकें और उनका पालन कर सकें।

भारत जैसे देश में, पारिवारिक मूल्यों का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि यहाँ परिवार को जीवन का आधार माना जाता है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है, जहाँ एक ही घर में कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं। यह व्यवस्था पारिवारिक मूल्यों को मजबूती से बनाए रखने में सहायक होती है, क्योंकि इसमें बच्चों को अपने दादा-दादी, माता-पिता, और अन्य रिश्तेदारों से पारिवारिक आदर्श और सस्ं कार सीखने का अवसर मिलता है। भारतीय सस्ं कृति में परिवार के प्रति निष्ठा, सम्मान, और त्याग के गुण को विशेष महत्व दिया जाता है, जो इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व परिवार के साथ उसके संबधों से निर्धारित होता है। उषा प्रियवंदा के कथा साहित्य में पारिवारिक मूल्यों का एक विशेष स्थान है। उनके लेखन में परिवार, उसके सदस्यों के आपसी सबंध, और समाज में पारिवारिक ढांचे की भूमिका को गहराई से समझाया गया है। उनकी कहानियों में पारिवारिक मूल्यों की व्याख्या केवल परंपरागत रूप से नहीं होती, बल्कि वह उन मूल्यों

के बदलाव, संघर्ष, और आधुनिक जीवन में उनके पुनर्निर्माण को भी चित्रित करती हैं। पारिवारिक मूल्यों का उनका चित्रण यथार्थवादी है, जिसमें सामाजिक परिवर्तन, व्यक्तिगत इच्छाओं और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच द्वंद्व को उकेरा गया है।

निष्कर्ष

उषा प्रियवंदा के कथा साहित्य में जीवन मूल्य की प्रस्तुति न केवल उनकी रचनाओं का केंद्रीय तत्व है, बल्कि यह पाठकों के मन में गहरी संवेदनाएँ और विचार उत्पन्न करने का माध्यम भी है। उनके कथा संसार में जीवन मूल्य का विस्तृत और समृद्ध चित्रण किया गया है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है, बल्कि समाज की जटिलताओं और विविधताओं को भी समझने में सहायक ह।ै प्रियवंदा ने अपने पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जीवन मूल्य केवल नैतिकता या सिद्धांतों का समूह नहीं है, बल्कि ये मानव अनुभव के वास्तविकता के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। उनकी कहानियों में जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रमे, त्याग, संघर्ष, समानता, और सामाजिक जिम्मेदारी का समावेश किया गया है। प्रियवंदा के पात्र अक्सर कठिनाइयों का सामना करते हैं, और उनके निर्णय और क्रियाएँ जीवन मूल्यों के प्रति उनके दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। यह मूल्य न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि ये समाज में भी परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं। प्रियवंदा ने यह दिखाया है कि कैसे व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन और ईमानदारी को अपनाकर न केवल अपनी पहचान बना सकता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

उषा प्रियवंदा का लेखन यह भी दर्शाता है कि जीवन मूल्य कैसे पीढ़ी दर पीढ़ी बदलते हैं और कैसे ये व्यक्ति और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके पात्र अक्सर पारपं रिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच झलू ते रहते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जीवन मूल्य के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव का प्रभाव कैसे मानव अनुभव को आकार देता है। प्रियवंदा ने यह समझने में मदद की है कि व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्य एक-दूसरे के साथ किस प्रकार जुड़े हुए हैं, और यह समझ हमें अपने जीवन के निर्णयों में विवके पूर्ण और नैतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

दुबे, ए. (2021). उषा प्रियवद के लेखन में नारी के संघर्ष। भारतीय साहित्य और सस्ंकृति जर्नल, 13(2), 41-55।

नायर, एस. (2021). उषा प्रियवंदा के लेखन में नारी संघर्ष। समकालीन साहित्य जर्नल,11(2), 67-81।

राव, एस. (2021). उषा प्रियवंदा के लखन में नारी के अधिकारों की खोज। महिला विमर्श जर्नल, 19(2), 11-25।

बानर्जे, आर. (2021). उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में सघंर्षरत नारी। समकालीन साहित्य जर्नल, 10(2), 39-53।

कपूर, एस. (2021). उषा प्रियवंदा के लेखन में नारी के मुद्दे। भारतीय साहित्य जर्नल, 10(4), 41-55।

चटर्जी, पी. (2020). उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी विमर्श। महिला अध्ययन जर्नल, 8(3), 56-70।

कपूर, आर. (2020). उषा प्रियवंदारू नारी विमर्श की एक आवाज। समकालीन साहित्य जर्नल, 10(3), 22-37।

कुमार, एन. (2020). उषा प्रियवंदा के लेखन में नारी की स्वायत्तता। भारतीय महिलाओं का साहित्य, 19(2), 66-80।

मेहता, न. (2020). उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में परिवार और नारी। भारतीय साहित्य विश्लेषण, 18(3), 56-70।

बानेर्जी, पी. (2019). उषा प्रियवंदा और भारतीय नारी का विकास। समकालीन साहित्य विश्लेषण, 10(2), 78-92।

गुप्ता, एस. (2019). उषा प्रियवंदा का नारी स्वतंत्रता पर दृष्टिकोण। आधुनिक हिंदी साहित्य, 6(1), 22-36।

खन्ना, ए. (2019). उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में पारपं रिकता और आधुनिकता का संतुलन। महिला विमर्श जर्नल, 14(2), 33-48।

माथुर, के. (2019). उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी के अधिकार। महिला अध्ययन जर्नल, 15(1), 29-43।

अग्रवाल, के. (2018). उषा प्रियवंदा की साहित्यिक यात्रा, विषयों और शैलियों का अध्ययन। आधुनिक भारतीय साहित्य जर्नल, 12(1), 34-48।

जोशी, एन. (2018). उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में पारिवारिक संबधों का चित्रण। भारतीय साहित्य जर्नल, 11(1), 39-52।

मल्होत्रा, वी. (2018). उषा प्रियवंदा की नारी छविरू एक विश्लेषण। आधुनिक हिंदी साहित्य जर्नल, 9(4), 72-85।

मिश्रा, आर. (2018). उषा प्रियवंदा की कथा में नारी विमर्श। महिला अध्ययन पत्रिका, 7(4), 15-29।